366
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1221/14/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 366

❀ वन्देभारत ❀

देस का राग

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC 1930

1436

366

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—चिरंजीलाल विद्यार्थी

दयानन्द सं० १०७ मू०-)

LASK
4/1011
091.431

भजन नं० १

छीन सकती है नहीं सरकार बन्देमातरम् ।
हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम् ॥ १ ॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुंची जहां झनकार बन्देमातरम् ॥ २ ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥ ३ ॥
जेल में चक्की घसीटे भूख से हो मर रहा ।
उस समय हो बक रहा बेज़ार बन्देमातरम् ॥ ४ ॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से ।
भौंक दे सीने में वह तलवार बन्देमातरम् ॥ ५ ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी, सर हिलाकर कहदिया ।
होगया इसको तो ये आज़ार बन्देमातरम् ॥ ६ ॥
ईद होली और दशहरा शबरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाडला त्यौहार बन्देमातरम् ॥ ७ ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥ ८ ॥

❀ गज़ल आज़ादी का [illegible] २ ❀

[illegible] फिदा होजायेंगे ।
[illegible] तरह दे [illegible] होजायेंगे ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 366
Date 8.12.71

हासिल आज़ादी करेंगे जिस तरह भी हो सके ।
देख लेना दास के हम नक़्शे कदम होजायंगे ॥
क्यों हमें कमज़ोर समझे हो निहत्था जान के ।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला होजायंगे ॥
आग से मत खेलना हम हैं बगूले आग के ।
गर भड़क उठे तो पैग़ामे कज़ा होजायंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है ।
आगया है वक्त अब नाले रसां हो जायंगे ॥
मालकी होगी ज़रूरत तो लुटा देंगे जौहर ।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब फ़िदा होजायंगे ॥
एक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की ।
और जवाहरलाल नेहरू ना खुदा होजायंगे ॥
आने वाला वक्त है लो देख लेना दोस्तो ।
आज तो आजिज हैं कल वह क्या से क्या होजायंगे ॥

शहीद-गर्जना

भारत न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना ।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना ॥
खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ।
[illegible] हम कहेंगे ।
[illegible] ।

परवाह अब किसे है जेलों दमन की प्यारो।
इक खेल होरहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा, भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है, मंजूर सर कटाना॥

पेशावर के शहीदों का संदेश। ३

ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं।
हमतो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं॥
पर याद रखना तुम भी ज़ालिम ये रहन जायें।
कुछ दिनमें वापिस हमभी अब फेर आरहे हैं॥ १
देखो हमारा हक है हम हिन्द के हैं मालिक।
इस हिन्द के लिये हम ये सर चढ़ा रहे हैं २॥
लानत है यार उन को जो हैं गुलाम इनके।
कहने से दुश्मनों के छुरियां चला रहे हैं ३॥
ऐ भाईयो पुलिस के ऐ भाई फौज़ वालो।
हम तो तुम्हारे हक़ में इन्साफ़ चाह रहे हैं ४॥
यह धर्म है तुम्हारा तुम छोड़ दो गुलामी।
हम आप की वजह से ये खूं में नहा रहे हैं ५॥
यह आरजू हमारी तुम मर मिटो इसी पर।
आज़ाद हो के रहना जो हम तो जा रहे हैं ६॥

गजल ४

नहीं रखनी सरकार जालिम नहीं रखनी।

आई थी व्यापार करन को, जहांगीर की शरण रहन को,
बनी गले का हार ॥ जालिम नहीं रखनी ० ॥
जलियांवाले बाग़ के अन्दर, निर दोशों पर गोली चला-
कर, मारे कई हजार ॥ जालिम नहीं रखना ॥
गरीब किसान लगान लगाकर, भूखे दिये हैं मार ॥जा० ॥
लूटले इलकी बचान कोई, बढ़ई चमार लुहार ॥ जालि० ॥
कानू नका जाल बिछाया, ऐसी है सरकार ॥जालिम नहीं ॥
हिन्दू, मुस्लिम, जाट, क्षत्रिये, लड़ाये बीच दरबार॥जा० ॥
खेतों से करें, पूरी उघाई, धमकी की भर मार ॥ जालिम०
पेशावर में गोली चला कर, मारे कई हज़ार ॥ जालिम० ॥
झंडा आजादी का लेकर, घर घर करो प्रचार ॥ जालि०
गांधी के अब बनो सिपाही, करो देश उद्धार ॥जालिम०
मिले स्वराज्य या निकले कांटा, होजाये बेड़ा पार ॥ज०

गजल ५

हमारे देश भारत की यह आखिर लड़ाई
न होगा जंग फिर ऐसा महात्मा ने बताई है
करा तुम जग दुश्मन से अहिन्सा धार कर दिलें
न ऐसा वक्त पाओगे हवा ऐसी यह आई है

करो तुम हिम्मते मरदा मदद देगा खुदा तुमको।
बनाया आसमां जिसने ज़मीं जिसने बनाई है॥
मरेगा देश के हक़ में वही ग़ाजी कहायेगा।
रहेगा मुंह छिपा कर जो वही गद्दार भाई है॥
तुम्हें ये जेलकी घुड़की दिखा करके डरायेंगे।
मगर तुम एक मत सुनना करो इन पर चढ़ाई है॥
तुम्हारे धर्म ईमा की सचाई देख लेने को।
ज़माने भरने आकर के नज़र तुम पर जमाई है॥
न करना ख्याल यह दिल में कि आजादी नहीं।
यह थोड़े दिन की सख्ती है जो ज़ालिम चलाई है॥
मुसीबत जितनी सहते हो तुम्हें राहत दिखायेगी।
हिना जो पिसगाई पत्थर से वही रंग लाई है॥
वह पछतायेगा पीछे से न मानेगा जो गांधी की।
तआसुब को हटादीजे वतन की यह लड़ाई है॥

ग़ज़ल ६

ज़ालिमों के ज़ुल्मको बिलकुल मिटाना चाहिये।
अब तो कुछ बीरो तुम्हें करके दिखाना चाहिये॥
जब तुम्हारे देश में है जंग आज़ादी ठनी।
क्या तुम्हें इस वक्त पर भी मूंह छिपाना चाहिये॥
आपके सबसे बड़े नेता चले गये जेल में।

कुछ तो गैरत आपको भी शरम आनी चाहिये ॥
मरद कहलाते हो तुम कुछ तो करो मरदानगी ।
वरना हाथों में तुम्हें चूड़ी चढ़ाना चाहिये ॥
देशकी और कौम की हालत को जो सुनता नहीं ॥
उनके माथे पर भी स्याही टीका लगाना चाहिये ।
गाय और सूअर की चर्बी खून से कपड़े बुने ॥
ऐसे नापाकों के कपड़े को जलाना चाहिये ।
अब बिदेशी को ना बरतो कोई कपड़ा हो या चीज ।
ऐसे सब सामान पर लाहोल पड़ना चाहिये ॥
हुक्म है गांधी का यें सब वस्त्र खद्दर के बनें ।
शुध्द खद्दर की लंगोटी तक बनाना चाहिये ॥

गज़ल

हुक्म गांधी का सर आंखों से बजाना होगा ।
रंड़ियो तुम को भी अब चर्खा चलाना होगा ॥
ऐ रंडियों तुम छोड़दो अपने नीच कर्म्मों को ।
क्यों के कुछ रोज़ तुम्हें न गाना बजाना होगा ॥
अपने भड़ओं से कहो अब कोई रुज़गार करो ।
क्योंकि कुछ रोज़ तुम्हें ये बात निभानी होगी ॥
ये रंड़ियो छोड़दो तुम अबतो चिकन मलमल को ।
अबतो खद्दर से तुम्हें प्यार बढ़ाना होगा ॥
ये रंड़ियो छोड़दो अब संट लेवेंडर को ।
देशी इत्र तुम्हें मलना मलाना होगा ॥

गजल

मेरा रंग दे तिरंगी चोला, मां रंगदे तिरंगी चोला।
इसी रंग में रंग शिवा, जाने मां का बंधन खोला॥
यही रंग हल्दी घाटी पर, खुलकर के था खेला। मेरा० ।
इसी रंग में गांधीजी ने नमक पर धावा बोला॥ मां० ।
देख देख कर गांधीजी को अरविंद का दिल खोला। मां०
इसी रंग में वीर जवाहर लिये फिरे हैं झोला। मां० ।
इसी रंग में दत्त भक्त, ने फैंका बम्ब का गोला। मां०
इसी रंग में जतिन्द्रदास ने अपना चोला छोड़ा॥ मां ।
इसी रंग में लाला जी ने स्वर्ग का रस्ता खोला। मां ।
इसी रंग में किचलु जी ने देहली का मुंह जोड़ा॥ मां०
इसी रंग में सत्यबती ने अपना जीवन तोला। मां ०।
इसी रंग में सुखदेव जी ने दिहात का झंडा खोला॥ मां
इसी रंग में बिस्मिल जी ने रेल पर धावा बोला। मां ।
इसी रंग में देश भक्तों ने जेल का फाटक खोला॥ मां ।

गजल

मिटादेंगे हकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेगें।
हम अपने मुल्क पर खुद अपना कब्ज़ा करके छोड़ेगे॥
तू ऐ वादेसबा जाकर यह पंजम जार्ज से कहदे ।

कि हम इंगलैंड वालों को लिफाफा करके छोडेंगे ॥
पहनकर कोट और पतलून जो न आते में अपनेथें ।
हम उनको अब मुजस्सिम पायेजामा करके छोडेंगे ॥
फिरेंगे दर बदर घर घर जगाते देश भक्तों को ।
जो मुर्दा दिल हुये हैं उनको जिन्दा करके छोड़ेगें ॥
गज़ब की बेड़ियां डाली हैं जो ज़ालिमने पैरों में ।
उसी झनकार से हम हश्र बरपा कर के छोड़ेगें ॥
न छोड़ें जीते जी दुश्मन कभी हम वह काले हैं ।
अगर छोड़ेगें दुश्मन को तो मुर्दा करके छोड़ेगे ॥
अजीजो अब मरव्विज होनेदो गांधी के चरखेको ।
इसी चरखे से हम दुश्मन को चर्खा करके छोड़ेगे ॥

देश भक्ति वीर की गर्जना

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ ज़ालिम मिटा देंगे ।
जबां से जो निकालेंगे वह हम करके दिखादेंगे ॥
भड़क उठेगी जब सीनये सोज़ा की दबू आतिश ।
तो हम इक सर्द आह भरकर तुझे ज़ालिम जलादेंगे ॥
हमारे आहो नालों को तुम बे सूद मत समझो ।
जो हम रोने पर आयेंगे तो इक दरया बहा देंगे ॥
हमारे सामने सख्ती है क्या इन जेल खानों की ।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखादेंगे ॥

हमारी फ़ाका मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशां तेरा मिटादेंगे तुझे जब बददुआ देंगे ॥
हज़ारों देश भक्त अब क़ौमी परवाने हैं ज़िन्दा में ।
हम उनके वास्ते सब मालो ज़र अपना लुटादेंगे ॥
कुछ इस में राज था मुद्दत से जो ख़ामोश बैठे थे ।
हम अब करने पे आये हैं तो कुछ करके दिखादेंगे ॥
अगर कुछ भेट आज़ादी की देवी हमसे मांगेगी ।
समझ कर हम ज़हे क़िस्मत सब अपने सर चढ़ादेंगे ॥
नहीं मनज़ूर अब इज्ज़त हमें सर माया दारों की ।
बना कर शाह नेहरू को सिंहासन पर बिठादेंगे ॥

सत्याग्रह कैसे रुक सकता है ?

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमलमें लाकर दिखाना होगा ।
प्रजा के आगे तुझे सितमगर! सर अपना अबतो झुकाना होगा
१ नशीली चीज़ें शराब, गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं
मिटा के इनकी ख़रीद-बिकरी, दुकाने सारी उठाना होगा
२.हमारे सिक्के की दर को साहब! गटा बढ़ाकर जो लूटते हो
अब एक शिलिंग चार पेनी ही भाव उसका बनाना होगा
३.लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा खुशी हों
ह कमी इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा
४.फ़िज़ूल ख़र्ची बिला ज़रूरत, जो फ़ौज पर हो रही हमारी

अधिक नहीं गर, तो आधा उसको. जरूर साहब ! घटानाहोगा
५.बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन डकारते हैं जो आला अफ़सर
उसे मुआफ़िक लगाना आधा, या उससे भी कम कराना होगा
६.स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावे
विदेशी कपड़ों पै भी महसूल. ज्यादा तुम को लगाना होगा
७.समुद्र तट का जहाजी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के;
उसे हमारे महाजनों के अधीन रखकर चलाना होगा
८.जिन्हें क़तल या क़तल-इरादा. सज़ा मिलि हो, उन्हें नछोड़े
बक़ाया कौदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब ! छुड़ाना होगा
९.उठा लिया जाय राजनैतिक, जो मामले चल रहे मुलक पर
जो इकसौ चौबिस दफ़ा अलिफ़ है, उसेतो बिल्कुल मिटानाहोगा
अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफ़ा ऐसी सब उठाकर
हमारे भाई जो निर्वासित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा
१० महिकम । खुफ़िया-पुलिस उठादो, या करदो उसको प्रजाके तावे
११ हमें भी बन्दूक और पिस्तल, बरा हिफाज़त दिलाना होगा
["स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से उद्धृत]

गोलियों की बौछार

हटो जी ज़ालिमों को ज़ुल्म की सीमा बढ़ाने दो ।
हमें गर्दन झुकाने दो. उन्हें खञ्जर चलाने दो ॥ १ ॥
भले होजाय वे इस दम, हिरण्यकश्य से भी ज्यादा।

हमें प्रहलाद बनके आज उनसे पेश आने दो ॥ २ ॥
नतीजा उनकी करनी का निकल आएगा दमभर में ।
खुदा की भी खुदाई पर उन्हें क़ब्ज़ा जमाने दो ॥३॥
तमाशा दूर से देखो हमारे हाल का भाई ।
हमारा जिस्म तीरों का उन्हें नर्क़रा बनाने दो । ४ ।
किया जो कुछ उन्होंने और जो कुछ है अभी बाक़ी ।
बक़ाया अपनी हसरत का उन्हें हमसे चुकाने दो ॥
ज़माना देख लेना कौन राहे हक़ में साकिर हैं ।
इज़रा न्साफ वाले को खबर यह यार पानेदो ॥ ६ ॥
करे रे सख्तिा जितनी हमारा काम उतना हो ।
उन्हे डायर को डामा कर जगह करके दिखानेदो ॥ ७ ॥
करेंगे मुल्क की खिदमत, चलेंगे उठके गिर-गिर के ।
हरज क्या भाईयो, अब राह में कांटे बिछानेदो ॥ ८ ॥
"शरख" अगर गालिबरा आकर, खुशी से जेलमें जाकर ।
अब अपनी कौमियत सोई हुई हमको जगाने दो ॥ ९ ॥

गज़ल

भारत मां के दो लालों ने मांका अपमान मिटाने को ।
दो गोले बम्ब के फैंक दिये, सोतों को शीघ्र जगानेको ॥
फिर निर्भय होकर खड़े रहे, हो भय चिन्ता से दूर वहीं ।
सब भांति वे तत्पर थे, भू मां का मान बढ़ाने को ।
फिर न्यायकी अभिनेय शालामें अंग्रेज़ निश्चयत कामकिये

आजन्म जेलकी सजा करी, निज पथ से उन्हें डिगाने को
वे सभ्य सुजन मां के प्यारे, जब जेलों में जाके बैठे।
कुनीति की भीत खड़ी देखी सभ्यों का मान बढ़ाने को॥
अन्याय बड़ा यह होता है भारत के कारागारों में।
कुछ सभ्या-सभ्य का भेद नहीं मानी का मान मिटाने को
वे मानी हैं मिट जायेंगे मिट कर भी उन्हें मिटायेंगे॥
थे भूख व्रत पर डटे हुये अधिकार न्याय युत पाने को।
है समय नहीं अब सोने का उटकर युवको कुछ काम करो
रण भूमि में आडट जाओ, भारत स्वाधीन कराने को॥
संदेश देश को है उनका अब मान पै अपने मर जाओ।
या रहो 'अभय' जग में होकर भारतका भाल उठाने को॥

गजल

खुद जेल में जाकर बतलाया, स्वराज्य का मंदिर जेल में है। खुज जेल के रस्ते कौन से हैं, जब कौम का रहबर जेल में है?॥ सब मुल्क के आदिल और दिमाग, और हिन्दोस्तां के चश्मो चिराग। हर एक खिरदवर जेल में है, यानी हर लीडर जेल में है॥ हर रिश्वत ख्वार व चुगल खोर हर ज़ालिम ऐश उड़ाता है। बदतर से बदतर मौज में है, बहतर से बहतर जेल में है॥ जिस दिल में था बैराग निहां, थी हुब्बे वतन की आग जहां। जो शख्स भी था बेलाग यहां उस शख्सका बिस्तर जेल में है॥ जब पांव पड़ी जंजीर नहीं, और दिल में अपने हूकोर

नहीं। तो जलील में गम को अखीर नहीं, हर अज़ीज़ व बद तर जेल में है ॥ खुद काम हो तुम बदनाम हो तुम, नाकाम हो तुम कि गुलाम हो तुम। बाहर है गुलामों का मसकन, आज़ादों का घर जेल में है ॥ है शेर बबर पंजाब का भी, जिन्दाने बला के पिंजड़े में। पाबंद हवस बुज़दिल बाहर, आज़ाद और सफ़दर जेल में है ॥ क्या उल्टे तरीके निकले हैं, इन्सानों के एजाज़ अब। सब कंकड़ पत्थर सड़कों पर, और शेर जवाहिर जेल में हैं ॥ ऐ बन्देमातरम् पे शैदा, इक पुतला इस्तकलाल का है। अभी सद्हा और आमादा हैं, गो चौथा एडीटर जेल में है ॥

गजल

तैयार हैं हम जेल में चक्की चलाने के लिये।
तैयार हैं हम मूंज की रस्सी बनाने के लिये ॥
मंजूर सुरखी कूटना कोल्हू चलाना है हमें।
तैयार हैं हम अधभुना दाना चबाने के लिये ॥
कम्मल बिछाने ओढ़ने में कष्ट ही है क्या हमें।
तैयार हैं हम भूमि को बिस्तर बनाने के लिये ॥
आंधिया कुरता कड़े में शर्म है कुछ भी नहीं।
तैयार हैं बेवदन जीवन बिताने लिये ॥
निज धर्म पालन के लिये डर तोप गोलों का कहां।
तैयार हैं [illegible] ॥

जब तक नहो स्वाधीन भारत स्वर्ग में भी सुख नहीं।
तैयार हैं हम नर्क का ही कष्ट पाने के लिये॥

रहने दीजिए

बेड़ियों की पैरों में झनकार रहने दीजिये।
तौक़ कुछ दिन तो गले का हार रहने दीजिये॥
उल्फ़ते गांधी का दावा और सर पर फेल्ट कैप!
हो चुका, बस हो चुका, सरकार! रहने दीजिये॥
सख्त जां हूं. कुछ असर इन ओछे वारों का नहीं।
म्यान ही में आप यह, तलवार रहने दीजिये॥
हश्र बरपा होगा रूहें उठ खड़ी होंगी अभी।
बस क़यामत-खेज़ यह रफ़्तार रहने दीजिये॥
एक ही दोनो हैं, दोनों में है रिश्ता एक ही।
इम्तियाज़े तसबी-ओ-ज़ुन्नार रहने दीजिये॥
हम यहां खद्दर से अपने काम सब लेंगे चला।
ज़ीन अपनी बस समन्दर पार रहने दीजिये॥
काम का है वक्त "अख्तर" आईए मैदान में।
अब दलीलो, हुज्जतो तक़रार रहने दीजिये॥

सर फ़रोशी की तमन्ना

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥

रहबरे राहे मुहब्बत रहन जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरए मंज़िल में है॥

वक्त आने दे, बतादेंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।

आज फिर मकतल में, क़ातिल कह रहा है बार-बार॥
क्या तमन्नाए शहादत भी किसी के दिल में है।

ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निशार॥
अब तेरी हिम्मत का चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है।

अब न अगले वलवले हैं, और न अरमानों की भीड़॥
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत, अब दिले "बिस्मिल" में है॥

क्रान्ति गीतांजलि =) काकोरी के गीत =)॥
शुद्धि की तलवार =)॥ हकीकत राय ॥=)
स्वामी जी का जीवन १॥) मंगलामुखी।=)
शिवाजी का जीवन ॥।) ऐतिहास पुष्पांजली ॥।)
काकोरी शहीद (ज़ब्त) लाजपतराय ॥)
खूनी राज्य (ज़ब्त) पाखंडीनी।)
धर्म शिक्षा =)। कांग्रेस के महा पुरुष १)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

पथिक एन्ड कम्पनी दिल्ली

नं.ट--सामाजिक और पोलिटीकल पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं।

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा।